



नाम - डॉ. स्वर्ण प्रभा अग्रहर

कार्यकाल - 01.08.1966 से 31.07.2010

प्रकाशित कार्य : -

1. भारतीय जीवन-दर्शन या भारतीय वैदिक संस्कृति का क ख ग
2. गुप्त - बन्धु कृत 'अनल-प्रकाश' महाकाव्य (संपादन)
3. गुप्त - बन्धु कृत 'अनल-प्रकाश' : एक समीक्षात्मक अध्ययन
4. अधिकारों के खेल (मानवाधिकार संबंधी बाल-एकांकी संग्रह)
5. भारतीय (वैदिक) संस्कृति संबंधी लेख
6. देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता संबंधी विभिन्न लेख

उपलब्धियां : -

1. मैथिलीशरण गुप्त पुरस्कार, दिल्ली विश्वविद्यालय
2. महामहोपाध्याय लक्ष्मीधर शास्त्री पुरस्कार, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय
3. भारतेन्दु हरिश्चंद्र पुरस्कार (बाल साहित्य वर्ग), शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार।

4. सहस्राब्दी हिंदी सेवी सम्मान हिन्दी भाषा, साहित्य और संस्कृति के शिक्षण के लिए तथा संबंधित योजनाओं और कार्यक्रमों पूर्ण भागीदारी और उत्कृष्ट संयोजन के लिए।

5. आजीवन सदस्यता - नागरी संगम, नागरी लिपि परिषद, गांधी स्मारक निधि द्वारा संचालित

6. आजीवन सदस्य : - आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी स्मारक भाषणमाला समिति, हिन्दी विभाग, दौलतराम कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय।

7. कोषाध्यक्षा, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी स्मारक भाषणमाला समिति प्रति वर्ष विभाग की सहमति और सहयोग से यह कार्य समिति की सहमति से अपने सेवानिवृत्ति वर्ष 2010 तक किया। समिति की मजबूत व्यवस्था और हिंदी विभाग की लगन का सुपरिणाम है कि भाषणमाला समिति अब तक 39 वर्षों से लगातार यह आयोजन कर रही है।

फरवरी 2020 में इसका 39वां सफलतापूर्वक हुआ।

इतने वर्षों तक लगातार चलते रहने वाली यह भाषणमाला अपनी लंबी जीवंतता का कीर्तिमान है।

8. आजीवन सदस्य, राजभाषा संघर्ष समिति।

इसके अंतर्गत राजभाषा के रूप में हिन्दी और भारतीय भाषाओं के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए प्रयास करना, कार्ययोजना का विशेष अंग है।

9. आजीवन सदस्य - लेखिका संघ, महिला लेखिकाओं का विशिष्ट मंच।

संस्था समय समय पर साहित्यिक कार्यक्रमों का आयोजन करती है। इन कार्यक्रमों में यथासमय सहभागिता करना।

आजकल बंगलौर के दक्षिण भारतीय भाषा भाषी समाज में स्वयंसेवी भाव से हिंदी भाषा और साहित्य की सेवा।

इसके निम्नलिखित मुख्य पक्षों पर काम कर रही हैं -

1. हिन्दी संभाषण

2. हिन्दी लेखन

3. हिन्दी शिक्षण

यह उस इलाके की भाषाई आवश्यकता के अनुसार व्यक्तिगत तौर पर मैं स्वयं करती हूँ । लोग बड़ी रुचि से साथ लग जाते हैं और मैं उनसे उनकी भाषा के बारे में भी सीखती रहती हूँ।

भाषा के आदान-प्रदान से राष्ट्रीय एकता मजबूत होती है। इसके लिए हम सबको साथ लगे रहना है।

हिन्दी वालेंटियर रूप में आपकी पहचान वहाँ बनती जा रही है।